सखीरी मेहेर बड़ी

सखीरी मेहेर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे।
अंतर आंखां खोलसी ,ए सुख सोई देखे।।

न था भरोसा हम को, जो भवजल उतरें पार।
इन जुबां केती कहूं, इन मेहेर को नाहीं सुमार।।

मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इस्क।
ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक।।

क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक।।

बढ़त बढ़त मेहेर बढ़ी, वार न पाइए पार।
एक ए निरने में ना हुई, वाकों वाही जाने सुमार।।

हुकम सरत इत आए मिली, जो फुरमाई थी फुरमान।
महामत साथ को ले चले, कर लीला निदान।।